आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 3/सितंबर 2022
Received:15/09/2022; Published:24/09/2022

साक्षात्कार

कन्नड कवि एवं लेखक डॉएस रामानुजम .पी .
के साथ डॉप्रतिभा मुदलियार की बातचीत .

- **डॉ. प्रतिभा मुदलियार**

डॉ एस रामानुजम जी के .पी .'निरंतर' इस कविता संग्रह का अनुवाद करते समय अकसर मैं यह महसूस कर रही कि थी कि एक बार कवि से रूबरू होकर बात कतनी चाहिए। उनकी कविता का स्तर काफी ऊँचा होने के कारण अनुवाद करते समय कुछ कठिनाइयाँ आने लगी थीं। अतः एक बार कवि से प्रत्यक्ष मिल कर उनका दृष्टिकोण जानने की तीव्र इच्छा थी। लगभग सारी कविताओं का अनुवाद पूर्ण होते ही उनसे मिलने का पक्का मानस बनाया। पत्र लिखा और तुरंत ही उन्होंने मिलने की अनुमति दी। बेंगलौर में सुबह ग्यारह बजे उन्हीं के कार्यालय में बातचीत का समय निश्चित हुआ।-

सुबह, ऑफिस में पहुंचने के पूर्व पुलिस विभाग की औपचारिकताएं पूरी की, एक पेपेर पर अपना नाम तथा मिलने का कारण लिखकर अंदर भेज दिया और तुरंत अंदर से बुलावा आया। कवि से मिलने का यह मेरा पहला ही अवसर था। तीखे नाकनक्ष-, अत्यंत तेजःपुंज, ऊँचापूरा व्यक्तित्व। अंदर प्रवेश करते ही - स्वागत के लिए उठ खडे हुए और पल भर बाद हम सभी स्थानापन्न । चाय की चुस्कियों के साथ हमारी प्रारंभिक औपचारिक बातें खतम हुईं। उनकी व्यस्तताओं से परिचित होने के कारण मैंने प्रश्नावली पहले से ही तैयार रखी थी। अतः औपचारिकता खतम होते ही मैंने प्रश्नावली उनके हाथों में सौंप दी। उन्होंने प्रश्नों पर एक नज़र डाली और प्रत्येक प्रश्न का संतोषजनक उत्तर दिया। मेरे प्रश्न और उनके उत्तर निम्नलिखित हैं-

प्रश्न : क्या कारण है कि आपकी कविताओं में उपनिषद तथा वैदिक साहित्य से संबंधित अनेक शब्द दिखाई देते हैं, और इनका प्रयोग भी सहज है, ऐसे में कभीकभी लगता है कि आपका झुकाव थोडा दर्शन की - ओर है, इस कारण मन में यह सवाल पैदा होता है कि कविता में व्यक्त होनेवाला दर्शन क्या उतनी ही सहजता से जनसामान्य तक पहुंच पाता है?

उत्तर : मेरी कविता में आनेवाले उपनिषद या वैदिक साहित्य से जुड़े शब्द अपनी संस्कृति में बहुत गहरे उतरे हुए हैं, और संस्कृति से तो सामान्य मनुष्य अधिक जुड़ा हुआ है। सच तो यह है कि जिसे हम कम्यूनिकेशन कहते हैं, वह मेरी दृष्टि में दो स्तरों पर होता है पामर और पंडित या मुग्ध और विदग्ध पामर ! या मुग्ध पाठक के लिए मेरी कविता सहज हो सकती है कारण वह संस्कृति से जुडा हुआ है और मुझे लगता है, "we should not go away from our roots, I expose the roots of our culture" और जिस दर्शन की आप बात कर रही हैं तो यह भूमि, यह देश तो उसी दर्शन के लिए जाना जाता है। हम सभी इसी

भारतीय संस्कृति से, संस्कारों से और दर्शन से जुड़े हुए हैं और अगर हम इन सबको छोड दें तो फिर हम अपनी पहचान ही खो बैठेंगे। एक सीधाजाते दर्शन बताकर जाता है। कविता में -सादा मनुष्य भी हमें आते- अभिव्यक्त होनेवाला दर्शन भी तो उसी का है, यानी हर भारतीय का है। धर्म, पुराण आदि सबकुछ - कालानुसार बदलता रहता है। मेरी दृष्टि में धर्म यानी religion नहीं है। धर्म 'रिलीजन' उस शब्द में अटककर बहुत सीमित हो जाता है। धर्म गतिशील होता है। इसीलिए मुझे जो कुछ सुंदर, अच्छा लगता है, उसे मैं स्वीकारता हूँ और उसे ही कविता में अभिव्यक्त करता हूँ।

प्रश्न : आपकी कविताओं में पौराणिक तथा महाभारतीय संदर्भों का प्रयोग अक्सर होता है, जैसे, सगरपुत्रों की कथा-, अगस्त्य की कथा या बृहतआरण्यक आदि। ऐसे संदर्भों से कविता का अपना एक अलग - प्रभाव भी होता है। आपकी कविता में आनेवाले इन संदर्भों में जो एक सहजता है उसके पीछे की साधना का रहस्य क्या है?

उत्तर : साधना बहुत बडे शब्द का प्रयोग है यह। !okay. एक तो मैं संस्कृत का छात्र रहा हूँ। मैसूर में बढा। संस्कृत में बोलता भी हूँ। घर का वातावरण भी संस्कृतमय था। -वर्ष संस्कृत वातावरण में पला 24 मेरे पिता संस्कृत आचार्य थे, अतः उनसे प्रभावित था। गुरुकुल में रहकर अध्ययन किया। पीएचडी का विषय . भी'वैदिक दर्शन' था और डी.लिट् वेणीसंहार की आलोचना पर पूर्व रसशास्त्र लागू किया। वास्तव में - रसशास्त्र एक विज्ञान है और विज्ञान में तत्वों का बड़ा महत्व होता है।'रस' के संबंध में सही संकल्पना या अवधारणा (concept) यही है कि उसमें सहृदय को बड़ा महत्व दिया जाता है।

जैसा कि अभी मैंने कहा कि प्राचीन रसशास्त्र में सहृदय को बडा महत्व दिया गया है पर, आज उसे उतना महत्व नहीं दिया जाता । आज भी कविता 'ध्वनि' से जुडी है। पर तब भी आस्वाद और आस्वादक तो हैं ही। आज कविता में कलागत अनुभूति को महत्व दिया गया है। यूँ देखा जाय तो मनुष्य अपनी अनुभूति को अनेक तरह की कलाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करता रहता है। संगीत, नृत्य, दृश्यश्रव्य-, चित्रकला आदि कलाएँ मनुष्य की अनुभूति को व्यक्त करनेवाली एक तरह की भाषा ही तो है। अतः आज की कविता भाषागत ध्वनि के लिए बढ़ रही है। 'रस' की कसौटी पर अगर आज की कविता को समझना है तो रससंख्या में वृद्धि कर लें। आज की कविता को समझने के लिए हृदय और सहृदय के बीच संबंध तलाशना या जोडना आवश्यक है। आज कवि और सहृदय पाश्चात्य विचारों तथा साहित्य से प्रभावित हैं। अतः वह सब अपने आप कविता में उतरता जा रहा है। पर व्यक्तिगत मैं भारतीय हूँ। और मैं अपना परिचय एक 'भारतीय' इसी रिश्ते से करता हूँ। एक सर्वसामान्य भारतीय यह परिचय मुझे सुहाता है। खैर,मुझ पर घर के वातावरण .... , पिता, गुरुकुल, भारतीय साहित्य और संस्कृति आदि का गहरा प्रभाव रहा है। इस कारण मेरे साहित्य में आपको अपने भारतीय संदर्भ दिखाई पडेंगे।

प्रश्न :'थलजल-' इस कविता में 'आपोवा इसग्रम आसोता', इस घोषणा का अर्थ और संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : एक स्थान पर किसी एक ऋषि मुनि ने 'आपोवा इसग्रम आसोता' कहा है। अर्थात् सृष्टि के प्रारंभ में केवल जल ही था। अंत में भी जल ही शेष होगा। यह स्थिति और लय का संबंध है और इसीलिए 'थलजल-' में दोनों सृष्टि के प्रतीक हैं। यह कविता पाठक के पामर और पंडित दोनों स्तरों पर संप्रेषित होती है। पर 'थलजल-' में मैं मात्र स्थिति का ही विचार करता हूँ। यह एक संवाद है! दोनों के मध्य -

प्रश्न : आपकी एक अन्य कविता का शीर्षक है 'असमंजस उवाच'। सगर पुत्रों की कथा तथा आज के मनुष्य की स्थिति का अच्छा मेल आपने साधा है। इसमें कोई शक नहीं कि आधुनिक परिप्रेक्ष्य में यह कविता भाती भी है, पर आज के मनुष्य को 'असमंजस आत्मा' के रूप में क्यों चित्रित किया गया है? कविता के अंत में यही आत्मा भूमि को निगलने का निश्चय करती ही है।

उत्तर : अच्छा सवाल है । देखिए मैं खुद अपने आप को एक असमंजस आत्मा मानता हूँ। मनुष्य जब सामजिक नहीं था तब वह जंगल में रहा करता था। उस समय उसके जीवन के मूल्य, शैली भिन्न थी। आज मनुष्य की जीवन की ओर देखने की दृष्टि बदली है, उसके मूल्य भी बदले हैं। सारे समाज में दुर्व्यवहार व्याप्त है। कभीकभी तो केवल हिंसा ही नज़र आती है। ऐसे समय मेरी स्थिति असमंजस मनुष्य की तरह - होती है। कभी तो मुझे अपनी ही भूल दिखाई देने लगती है। बदले हुए परिवेश तथा समय में जीते हुए जब पुरानी घटनाएं याद आती हैं तब लगता है कि मुझे एक ऐसी शक्ति प्राप्त हो कि इस समाज को बदलना सहज संभव हो जाय मुच बहुत ही दुःख होता है और -आज की सामाजिक स्थितियों की ओर देख कर सच ! इसीलिए लगता है कि एक ऐसे determination के साथ यहाँ आये कि सारा अधर्म, अन्याय नष्ट कर दें कम से कम उसे दूर हटा दें।

प्रश्न :'द्वैत' कविता में आप 'अद्वैतवादीअहं ब्रह्मास्मी-' को क्यों नकारते हैं? मनुष्य और ईश्वर के बीच जो अंतर है उसे स्वीकारना आपको अधिक भाता है और उसी में आप महानंद का अनुभव करते हैं। इसका कारण समझ सकती हूँ?

उत्तर : पहली बात तो यह है कि यह कविता किसी भी द्वैतवादी या अद्वैतवादी दर्शन से संबंधित नहीं। इस कविता में व्यक्त भावनाएं बहुत नाज़ुक हैं। 'जब हम परमात्मा के बारे में सोचते हैं तब लगता है हम दोनों एक हैं। जब अद्वैत ही है तो सवाल ही कहाँ है? और कौनसा? 'मैं ही ईश्वर' कहते ही सब खतम होता है । फिर 'मैं' होने का सवाल ही नहीं होता 'अहं ब्रह्मास्मी' में यह सब आता है। ब्रह्मांडिक चेतना)universal consciousness) और सामाजिक चेतना दोनों अलग हैं, पर उस तरह दर्शन का विचार इस कविता में किया नहीं गया है।

मैं ने यह कविता अपने पिता की मृत्यु के उपरांत लिखी है। मुझ पर मेरे पिता का काफी प्रभाव रहा है। मेरी यह धारणा या कहिए कि विश्वास है कि मैं अपने पिता से पृथकअलग रहूँ तो उन्हें देखना कैसे / संभव होगा? एकाकार के बाद पृथक होना संभव ही नहीं। व्यक्तिगत रूप से मुझे युनिवर्सल होने की अपेक्षा सामाजिक होना ज़्यादा अच्छा लगेगा। क्योंकि मुझे मेरी पहचान, मेरा स्थान चाहिए ही। एकाकार में दोनों लय होते हैं अतः जिज्ञासा को अवसर ही नहीं है।

प्रश्न : मेरे विचार में आपकी कविता आम लोगों के लिए नहीं है, उसका अपना एक वर्ग है। एक विशिष्ट वर्ग ही उसका आस्वाद ले सकता है। आपका क्या विचार है ?

उत्तर : एक बात तो यह है कि मैं संस्कृत का छात्र हूँ। इस कारण संस्कृत साहित्य तथा भाषा का मेरी भाषा पर बहुत प्रभाव है। और संस्कृत एक अभिजात भाषा है । शब्द चयन तथा भाषा की शुद्धता, व्याकरण इस ओर मेरा विशेष ध्यान रहता है। शब्दों में ही संप्रेषण की सबसे बडी शक्ति होती है। हम जिन शब्दों का प्रयोग करते हैं वे वही अर्थ देने में समर्थ होने चाहिए जो हम संप्रेषित करना चाहते हैं। शब्दों का प्रयोग और अर्थ appropriate और meaningful होना अत्यंत ज़रूरी है। हमने कविता लिख डाली अब उसका अर्थ तलाशने की ज़िम्मेदारी सहृदय की है, कहना उचित नहीं। फिर रचनाकार या सृजनकार की आवश्यकता ही क्या? और जैसे कि मैंने पहले कहा कि पाठक के दो स्तर होते हैं पामर और पंडित अब फिर) ऐसा मेरा विचार है। यूँ तो मैं भी आधुनिक -मेरी कविता हर भारतीय समझ पायेगा (उसे दोहराऊंगा नहीं कविता ही तो लिखता हूँ। बस इतना कहना समीचीन होगा कि आज कविता का शब्द ध्वनि है और इसीलिए मैं शब्दों के विशिष्ट ध्वनि पर ज़ोर देता हूँ।

प्रश्न :'उसकी पुकार' इस कविता में आपने शब्दों का अच्छा खेल रचा है। आज मनुष्य ही मनुष्य को पहचानता नहीं तब आपको ऐसा क्यों लगता है कि उसकी फुसफुसाहट 'उपनिषद' और आवाज़ 'ओंकार' बन जाय। क्या यह केवल आदर्शवाद नहीं है?

उत्तर :यह सच है कि आज प्रत्येक मनुष्य अपनी बीन आप बजा रहा है। आज का युग ही ऐसा है कि कोई किसी को पहचानता नहीं। यहाँ सब झूठा और नकली है। कहीं भी कोई सत्य नहीं है। उसके बोलने में केवल आवाज़ है। आज मनुष्य भिक्षापात्र हो गया है। पर तब भी मुझे लगता है कि जहाँ कहीं मनुष्य की - आंतरिक आवाज़ सुनाई देती है, अपने कान अचानक खडे होते हैं, वह आंतरिक ध्वनि, वह स्वर, वह सुर हमारा ध्यान आकर्षित कर लेता है, तब मुझे लगता है इस आंतरिक स्वर सूर-और ध्वनि को हर एक को बडी गंभीरता से सुनना चाहिए। आज हमारी सांस्कृतिक चेतना लुप्तप्राय होती जा रही है। उसमें पुनः प्राण डालने ज़रूरी हैं। 'उसकी पुकार' यह कविता एक तरह से भारतीयता का मानवीकरण ही है। इसीलिए उसकी आवाज़ संस्कृति का अपना परिचय देने में समर्थ हों अगर प्रत्येक मनुष्य अपनी ध्वनि से ही अपनी पहचान ! मनुष्य के मध्य निर्माण हुआ यह अंतर खतम हो जायेगा। मेरी यह कामना अगर आदर्श-दे सका हो तो मनुष्य है तो मुझे यह आदर्श प्रिय है।

प्रश्न : आप जिस विभाग से संबंधित हैं वहाँ डंडा चलता है। पर आपकी कविता में यह 'डंडा' कहीं नहीं है। वहाँ प्रकृति का सुंदर चित्र मिलता है। कभी आप नदी के साथ बह कर समुद्र होने की इच्छा रखते हैं तो कभी पतंग की पीठ पर सवार आकाश को बाहों में भरना चाहते हैं। आज के व्यस्त जीवन में जब आकाश की अनुभूति होना ही मुश्किल हो गया हो तब आप प्रकृति से इतना तादात्म्य कैसे कर पाये?

उत्तर : मूलतः मैं एक देहाती हूँ। गाँव में रहनेवाला। गुरुकुल में पढालिखा। जहाँ मेरी अपनी ही - एक प्रकृति थी। मोर, गाय, हाथी, कुत्ता आदि कुछ ऐसे ही प्राणी थे। इसके बीच में पला बढा। गाँव का संग-साथ होने के कारण प्रकृति मेरी सबसे प्रिय साथी थी। आकाश में बहनेवाले बादल कभी पराये लगे ही नहीं।

उनका मानवीकरण इसी अनुभूति के कारण संभव हो पाया है। प्रकृति जितना डराती है, उतना प्यार भी करती है। इसका अहसास होना ज़रूरी है। यूँ तो प्रकृति का जडचेतन हम से निरंतर एक संवाद स्थापित - करता रहता है। हमारे इंद्रिय अगर सजग हों, जागे हुए हों तो यह सुख संवाद जानना, समझना, सुनना सहज संभव है। अपने इस इतने से जीवन में सीखने की एकमात्र प्रक्रिया निरंतर होती रहती है।

प्रश्न : लगता है आपको अपना गांव बड़ा प्रिय है, वहाँ की मिट्टी, नदी, आकाश, फूल शहरों में रहने पर भी आपको याद आते रहते हैं। गाँव का वह निरीहजीवन आज भी क्या उतना ही स्वच्छ एवं पवित्र है-? मैं ने तो सुना हैं गाँव भी शहर होते जा रहे हैं?

उत्तर :जी हाँ पर मेरा अपना गाँव आज भी ऐसा ही है। मुझे ऐसे गाँव में जाना अच्छा नहीं ! 60 लगेगा जहाँ लोग ही बदल गए हों। मेरी कविता में व्यक्त होनेवाला गाँव/वर्षों पुराना है और मैं उसी 70 गाँव का वर्णन करता हूँ। इसे याद करता हूँ। उसके बारे में बोलता हूँ। मुझे अक्सरलगता रहता है कि आज की युवापीढि को यह समझ लेना चाहिए कि हम क्या खो रहे हैं।

प्रश्न :'अन्न' 'ब्रह्म' होने की प्रतीक्षा करता मनुष्य मैं समझ सकती हूँ, पर 'कोई मार्ग नहीं' इस कविता में आप क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर : वास्तव में कविता एक 'स्वगत' है। एक self-analysis कभी रसोई में-मैं कभी .'भात' बनाने की प्रतीक्षा में होता हूँ, तब अचानक ऐसे विचार आ जाते हैं। यूँ देखा जाय तो इस कविता की पार्श्व भूमि भारतीय है। अपनी संस्कृति में 'चावल' अलग और 'भात' अलग । पर पश्चिम वालों को केवल Rice ही मालूम है। पर यहाँ यह चेतना है। अनाज्ञ> अन्न> ब्रह्म यह प्रक्रिया केवल अपनी ही संस्कृति में समझी और जानी जा सकती है। इसीलिए मनुष्य अन्न 'ब्रह्म' कब बनेगा उस प्रतीक्षा में खड़ा है – पल, घडी, दिन, रात, मास, वर्ष, मन्वंतर आदि। मैं उस मनुष्य का एक प्रतिबिंब, एक बिंदू हूँ, जो युगों से चल रहा है।

प्रश्न : संस्कृत का आपका अध्ययन बहुत गहन है, कभी संस्कृत में लिखने का मानस है?

उत्तर : इच्छा तो है, पर पाठक कहाँ हैं? जब बूढा हो जाउंगा तब लिखूंगा भी।

प्रश्न : आपने अपनी पहली कविता कब लिखी? उसका विषय क्या था?

उत्तर : पहली कविता...? ठीकठीक तिथि याद- नहीं, पर उस समय मैं हाईस्कूल में था। जैसा - कहा मैंने, मेरी अपनी प्रकृति थी उसमें बिल्ली, कुत्ते, मोर, बछडा, पेड़पौधे-, गुरुकुल का वातावरण, वहाँ के संस्कार आदि थेइस कारण पहली कविता प्रकृति पर ही लिखी गई थी। ,

प्रश्न : कभी नाज़ुक, कोमल, हृदय को स्पर्श करनेवली प्रेमकविता लिखी है-? कुछ पंक्तियाँ बतायेंगे?

उत्तर : प्रेम कविता? नहीं, नहीं लिखी। जिसकी ज़्यादा ज़रूरत महसूस ही वही पहले लिखा। लगा, भारतीय मनुष्य को पहले उसकी संस्कृति, परंपरा, ब्रह्मांड आदि से परिचित कराना आवश्यक है। मैंने मनुष्य

को आई यू में रखकर की.सी.कविता लिखी है। जब उसकी पूरी हिफाज़त हो जायेगी, वह सम्हलेगा, उसके बाद ही उसे प्रेम करने दीजिए।

तब भी कुछ 'त्रिदल' हम दोनों के प्रेम के बीच लिखे हैं। एकदो बताता हूँ/, देखिए उसे प्रेम कविता कहा जा सकता है क्या?

विवाह हुआ और पति का पानिग्रहण किया",
अब लगता है
मैंने प्राणि"ग्रहण किया।-
*****
मैं पत्नी को"'वस्तु' के रूप में
कविता में इसलिए लेता हूँ
कि कविता वज़नदार बने।"

प्रश्न :आप कविता को 'कैपसुल' क्यों कहते हैं?

उत्तर : मुझे लगता है मेरी कविता एक कैपसुल' है। क्योंकि मेरी कविता के पीछे मेरा घना अनुभव छिपा है और मैं उस अनुभव को शब्दों के कैप्सुल में बांधने का प्रयास करता हूँ। और चाहता हूँ कि मेरा अनुभव स्वानुभव हो जाय मालूम (गुजिए की तरह ही बननेवाला एक पदार्थ) आपको कडबू (थोडा सा पॉज़) है? ऊपर आटे की परत और अंदर मीठा मेरी कविता कुछ ऐसी ही है। पहले पहल स्वाद नह !ीं आता पर बाद में सुस्वादु लगती है। सच तो यह है कि सहृदय और कविता में communication होना ज़रूरी है। कविता में जब तक यह संवाद स्थापित नहीं होता तब तक कविता एक छोर पर तो सहृदय दूसरे। इसीलिए जब मैं कैपसुल कहता हूँ तब एक ही वाक्य में कहता हूँ, "complexity is the only meaning of my poetry".

प्रश्न : आपको अपनी कविता कैसी लगती है?

उत्तर : उफ्फ बड़ा कठिन प्रश्न है। एक ही बात कहता हूँ !, "I am not satisfied with my poetry". मुझे अभी भी बहुत कुछ लिखना है। मेरे संस्कार बदले नहीं हैं, पर आसपास का वातावरण - बदलता जा रहाहै। यूँ संतुष्ट होना चाहिए पर नहीं, मैं संतुष्ट नहीं हूँ।

उपर्युक्त मेरे इन सवालों के जवाब कवि ने अत्यंत प्रेम से, गंभीरता से दिये। ऑफिस में ही चर्चा चल रही थी। बीचकॉल्स आ रहे थे। सबको अत्यन्त शांति से उत्तर दे रहे थे-बीच में अनेक फोन-- yes, everything is peaceful? Calm, quite, okay, very good, congratulation, ऐसे उत्तर देते हुए पुनः पल में ही साहित्य और संस्कृति के भावविश्व में उनका लौटना मन को भा रहा था। उनकी व्यस्तताएं - उन्होंने जब अपना) और उनका संतुलन देख कर मन गदगद हो रहा था।'किरातार्जुन' महाकाव्य का कन्नड अनुवाद का ग्रंथ दिखाया और उसके संबंध में अन्य जानकारी दी तो एक सवाल मुँह से छूट ही गया, 'आप

यह सब कब लिखते हैं? इतना बडा पद संभालते हुए, साहित्य के क्षेत्र में इतना बड़ा काम करने आपको वक्त कैसे मिलता है?' इस प्रश्न का उत्तर उन्होंने दिया, "अपनी ड्यूटी खतम करने के बाद मैं अपना प्रत्येक क्षण अपने इस कार्य के लिए सौंपता हूँ, I just don't spare a single minute, you know people those who say, I don't have time, they speak lie, अपने पास बहुत समय होता है, पर हमें उसका utilization मालूम नहीं होता।' यह उत्तर सुना और मुझे अपना सारा खाली समय दिखाई देने लगा। फिर एक बार चाय आयी। ग्यारह से एक – पूरे घंटे मुलाक़ात चल रही थी। कहाँ मुझे आधा घंटा मिलने की 2 संभावना लग रही थी, वहीं दो घंटे चर्चा चली, फिर हमने हमारी बातों को समेटना शुरु किया और पुलिस की खाकी वर्दी में छिपे कवि को सैल्यूट करते हुए हम उनके दफ्तर से बाहर निकले।

****